पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

संस्कृत प्रशिक्षण का कार्य निरन्तर चलते रहना चाहिये - राज्यपाल

लखनऊः 6 अप्रैल, 2018

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज माधव सभागार निराला नगर में आयोजित 15 दिवसीय सरल संस्कृत सम्भाषण शिक्षक प्रशिक्षक शिविर का समापन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप मुख्यमंत्री डा0 दिनेश शर्मा ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बेसिक शिक्षा विभाग श्रीमती अनुपमा जायसवाल व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ग्राम्य विकास डा0 महेन्द्र सिंह, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष डा0 वाचस्पति मिश्र, प्रमुख सचिव भाषा श्री जितेन्द्र कुमार, निदेशक संस्कृत संस्थान श्री हरि बख्श सिंह सहित बड़ी संख्या में संस्कृत के शिक्षक, छात्र-छात्रायें एवं संस्कृत अनुरागीजन उपस्थित थे।

राज्यपाल ने सभी प्रशिक्षुओं का अभिनन्दन करते हुये कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संस्कृत संस्थान को पुनर्जीवित किया है। संस्कृत शिक्षा को मुख्यमंत्री ने व्यवहार में बदला है। उन्होंने संस्कृत का श्लोक उद्धृत करते हुए कहा कि बुद्धिमान व्यक्ति की प्रथम पहचान है कि वह कोई काम की शुरूआत न करें और दूसरी पहचान है कि यदि काम शुरू किया है तो उसे निरन्तर करता रहे। राज्यपाल ने कहा कि संस्कृत प्रशिक्षण का कार्य निरन्तर चलते रहना चाहिये।

श्री नाईक ने कहा कि संस्कृत भाषा को पहचानने की जरूरत है। ज्ञान देने से ज्ञान बढ़ता है। इसलिये संस्कृत दीक्षांत समारोहों में जो सीखा है उसे अपने पास न रखकर दूसरों का ज्ञानवर्द्धन करें। लोगों में संस्कृत के प्रति उत्सुकता जगायें। संस्कृत को 'कम्प्यूटर फ्रेंडली' कहा जाता है। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले संस्कृत के प्रति अन्य लोगों की आस्था बढ़ायें।

राज्यपाल ने कहा कि संस्कृत की विशेषता है कि कम शब्दों में अधिक व्याख्या की जा सकती है। भारत में सभी प्राचीन ग्रंथ ज्यादातर संस्कृत भाषा में हैं। संस्कृत को जाने बिना भारतीय संस्कृति की महत्ता को नहीं जाना जा सकता। संस्कृत सही मायनों में भारत की आत्मा है। देश की वैचारिक प्रज्ञा को समझने के लिये संस्कृत एकमात्र माध्यम है। उन्होंने गत 26 मार्च को वाराणसी में राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोंविद की उपस्थिति में विमोचित अपनी पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' के संस्कृत संस्करण में संस्कृत विद्वानों की बड़ी संख्या में उपस्थिति को संस्कृत की लोकप्रियता का प्रमाण बताया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं उप मुख्यमंत्री डा0 दिनेश शर्मा ने कहा कि संस्कृत भाषा अन्य भाषाओं की जननी है। संस्कृत विधिसम्मत और वैज्ञानिक भाषा है। संस्कृत भाषा की उपयोगिता को बढ़ाने के लिये माध्यमिक शिक्षा के शिक्षकों को संस्कृत संस्थान द्वारा प्रशिक्षित किया जायेगा। संस्कृत को ग्राह्य बनाने एवं घर-घर पहुंचाने के लिये उसका सरलीकरण आवश्यक है। उन्होंने अपने संस्कृत शिक्षक को स्मरण करते हुए कहा कि जब वे जुबिली कालेज के छात्र थे तो उनके शिक्षक वलीउल्लाह उन्हें संस्कृत पढ़ाते थे।

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डा0 महेन्द्र सिंह ने कहा कि संस्कृत देव भाषा एवं अमृतवाणी है। सुबह उठने से रात में सोने तक हम संस्कृत के श्लोकों का उपयोग करते हैं। संस्कृत भाषा में सातों सुरों का संगम है। संस्कृत हमारे देश के संस्कारों का आधार है। उन्होंने कहा कि संस्कृत हमारे दैनिक जीवन में समाहित है।

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती अनुपमा जायसवाल ने कहा कि संस्कृत रमणीय और मनोहारी भाषा है। धार्मिक अनुष्ठानों में संस्कृत अत्यंत महत्वपूर्ण है। संस्कृत छोटी-छोटी आम बोलचाल में प्रयोग होती हैं। उन्होंने कहा कि नासा के वैज्ञानिकों ने भी संस्कृत भाषा में सफल संदेश भेजा है।

कार्यक्रम में संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष डा0 वाचस्पति मिश्र ने स्वागत उद्बोधन दिया तथा प्रमुख सचिव भाषा श्री जितेन्द्र कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में राज्यपाल सहित अन्य लोगों का अंग वस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मान भी किया गया।

अंजुम/ललित/राजभवन (139/11)

पञ्चदशदिवसीयं सरल-संस्कृत-सम्भाषण-शिक्षक-प्रशिक्षणम्
दीक्षान्त-समारोहः
" उत्तर प्रदेश के हर विद्यालय के छात्र, चाहे वे किसी भी माध्यम या बोर्ड के हों,वे सामान्य संस्कृत सम्भाषण में बोलते हुए दिखाई दें। "
मुख्यातिथिः
श्री रामनाईकः
मा. राज्यपालः,उत्तरप्रदेशः

पञ्चदशदिवसीयं
दीक्षान्त-समारोहः
मुख्यातिथिः
श्री रामनाईकः
मा. राज्यपालः,उत्तरप्रदेशः